International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में भारतीय चित्रकला का विकास

Surender
MA in History, MDU Rohtak
Reg. No. 03-CHM-200, Email : aryasiwach@gmail.com

शोध सारः भारत मे चित्रकला का इतिहास बहुत पुराना रहा हैं। राजस्थान में लोक चित्रकला की समृद्धशाली परम्परा रही है। मुगल काल के अंतिम दिनों में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक राजपूत राज्यों की उत्पत्ति हो गई, जिनमें मेवाड़, बूंदी, मालवा आदि मुख्य हैं। इन राज्यों में विशिष्ट प्रकार की चित्रकला शैली का विकास हुआ। इन विभिन्न शैलियों में की विशेषताओं के कारण उन्हे राजपूत शैली का नाम प्रदान किया गया। वस्तुतः राजस्थानी चित्रकला से तात्पर्य उस चित्रकला से है, जो इस प्रान्त की धरोहर है और पूर्व में राजपूताना में प्रचलित थी। विभिन्न शैलियों एवं उपशैलियों में परिपोषित राजस्थानी चित्रकला निश्चय ही भारतीय चित्रकला में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। अन्य शैलियों से प्रभावित होने के उपरान्त भी राजस्थानी चित्रकला की मौलिक अस्मिता है।इस शोध–पत्र में राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में भारतीय चित्रकला का विकास का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः चित्रकला, राजपूत शैली, धरोहर तथा राजस्थानी चित्रकला।

शोध–प्रविधिः इस शोध–पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्त्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

मन की अदृश्य भावनाओं को चित्र और रेखाओ द्वारा अभिव्यक्त करना चित्रकला कहलाती है। चित्रण की कला में सांस्कृति विकास नजर आता है। प्रागैतिहासिक काल में मध्य प्रदेश की भीमबटेका गुफाओं की चित्रकारी सबसे प्राचीन मानी जाती है। सिन्धु घाटी सभ्यता में मे मृदुभाण्डों, सिक्कों, दीवालो आदि पर बने हुये कई चित्र प्राप्त होते है। मौर्य और गुप्तकाल में इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ।वात्सायन के कामसूत्र में चित्रकला की गणना चौसठ कलाओ में की गई है। गुप्त चित्रकला के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण अजंता से प्राप्त हुये है। उत्कृष्ट रैखिक निरूपण और रंगो के गतिशील विस्तार ने इसके भित्ति चित्रों को विशेष बना दिया है। अजंता चित्रकला के मुख्यतः 3 विषय नजर आते है।

1. छतो कोनो आदि स्थानो को सजाने के लिये प्राकृतिक सौन्दर्य जसै–पुष्प, पशुपक्षी, नदी झरने तथा रिक्त स्थानो के लिये अप्सराओ, गंधर्वो तथा यक्षो के चित्र।
2. बुद्ध और बोधिसत्व के चित्र।
3. जातक ग्रन्थो के वर्णनात्मक दृश्य। इसमें करूणा, प्रेम, लज्जा, भय, मैत्री, चिंता, घृणा जैसे मानवीय भावनाओ का चित्रकला के माध्यम से अद्वितीय प्रदर्शन हुआ है।

गुप्तकाल की बाघ की नौ गुफाओ के चित्र मनुष्य के लौकिक जीवन से लिये गये है। बाघ गुफाओ के चित्रों में तत्कालीन वेशभूषा, केश विन्यास तथा अलंकार प्रसाधन आदि की जानकारी प्राप्त होती है। यद्यपि इसमें महात्माबुद्ध से सम्बन्धित कुछ दृश्य है परन्तु अधिकांश चित्र धर्म निरपेक्ष है जैसे– नृत्यगान, भव्य, राजकीय जुलूस, हाथियो की दौड, शोकाकुल युवतियॉ आदि। भारतीय इतिहास में गुप्तोत्तर काल से युगलकाल के पहले तक का समय चित्रकला की दृष्टि से अंधकारमय युग प्रतीत होता है। अब प्रश्न उठता है कि भारतीय समाज में क्या चित्रकला का महत्व समाप्त हो चुका था या यह कला भारत के किसी क्षेत्र विशेष में अपने को परिष्कृत कर रही थी, अपने में निखार ला रही थी। हॉ जब हम राजस्थान का इतिहास पढते है तो हमे ज्ञात होता है कि यहॉ की चित्रकला स्थानीय राजाओ द्वारा संरक्षण

पा रही थी और उत्कृष्टता के नित नये आयाम स्थापित कर रही थी। हमारे इस शोधपत्र का उद्देश्य भी यही है कि लोग राजस्थानी चित्रकला को जाने और समझे। चूँकि यहॉ चित्रकला राजपूत राजाओ द्वारा संरक्षण प्राप्त थी इसलियें इसे राजपूती चित्रकला भी कहा जाता है। मध्यकाल में मुगल चित्रकला का प्रभाव राजस्थानी चित्रकला में भी देखने को मिलता है।

राजस्थानी चित्रकला अपनी प्राचीनता के लिए जाना जाता है। अनेक प्राचीन साक्ष्य निःसदेह इसके वैभवशाली आस्तित्व की पुष्टि करते हैं। जब राजस्थान की चित्रकला अपने प्रारंभिक दौर से गुजर रही थी तब अजन्ता परंम्परा भारत की चित्रकारी में एक नवजीवन का संचार कर रही थी। अरब आक्रमणों के झपेटों से बचने के लिए अनेक कलाकार गुजरात, लाट आदि प्रान्तों को छोड़कर देश के अन्य भागों में बसने लगे थे। जो चित्रकार इधर आये थे उन्होने अजन्ता परम्परा की शैली को स्थानीय शौलियों में स्वाभाविकता के साथ समन्वित किया। उनके तत्वावधान में अनेक चित्रपट तथा चित्रित ग्रंथ बनने लगे जिनमें निशीथचूर्णि, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, नेमिनाथचरित, कथासरित्सागर, उत्तराध्ययन सुत्र, कल्पसूत्र तथा कालककथा विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं। अजन्ता परम्परा के गुजराती चित्रकार सर्वप्रथम मेवाड़ तथा मारवाड़ में पहुँचे। इस समन्वय से चित्रकारी की मौलिक विधि में एक नवीनता का संचार हुआ जिसे मडोर द्वार के गोवर्धन–धारण तथा बाडौली तथा नागदा गाँव की मूर्तिकला में सहज ही देखा जा सकता है। राजस्थान की समन्वित शैली के तत्वावधान में अनेक जैन–ग्रंथ चित्रित किये गये। शुरुआती अवधारणा थी कि इन्हें जैन साधुओं ने ही चित्रित किया है अतः इसे ठजैन शैली' कहा जाने लगा लेकिन बाद में पता चला कि इन ग्रंथों को जैनेत्तर चित्रकारों ने भी तैयार किया है तथा कुछ अन्य धार्मिक ग्रंथ जैसे बालगोपालस्तुति, दुर्गासप्तशती, गीतगोविंद आदि भी इसी शैली में चित्रित किये गये हैं तो जैन शैली के नाम की सभी चीनता में सन्देह व्यक्त किया गया। जब प्रथम बार अनेक ऐसे जैन ग्रंथ गुजरात से प्राप्त हुए तब इसे ठगुजरात शैली' कहा जाने लगा। लेकिन शीघ्र ही गुजरात के अलावा पश्चिम भारत के अन्य हिस्सों में दिखे तब इसे पश्चिम भारतीय शैली नाम दिया गया। बाद में इसी शैली के चित्र मालवा, गढ़मांडू, जौनपुर, नेपाल आदि अपश्चिमीय भागों में प्रचुरता से मिलने लगे तब इसके नाम को पुनः बदलने की आवश्यकता महसूस की गई। उस समय का साहित्य को अपभ्रंश साहित्य कहा जाता है। चित्रकला भी उस काल और स्वरुप से अपभ्रंश साहित्य से मेल खाती दिखाई देती है अतः इस शैली को ठअपभ्रंश शैली' कहा जाने लगा तथा शैली की व्यापकता की मर्यादा की रक्षा हो सकी। इस शैली को लोग चाहे जिस नाम से पुकारे इस बात में कोई संदेह नहीं कि इस शैली के चित्रों में गुजरात तथा राजस्थान में कोई भेद नहीं था। वागड़ तथा छप्पन के भाग में गुजरात से आये कलाकार ''सोमपुरा'' कहलाते है। महाराणा कुम्भा के समय का शिल्पी मंडन गुजरात से ही आकर यहाँ बसा था। उसका नाम आज भी राजस्थानी कला में एक सम्मानित स्थान रखता है। इस शैली का समय ११ वीं शताब्दी से १५ वीं शताब्दी तक माना जाता है। इसी का विकसित रुप वर्त्तमान का राजस्थानी चित्रकारी माना जाता है।

मुगल चित्रकला फारस (ईरान) और भारतीय चित्रकला का मिश्रित रूप थी। बिहजद, मीर सैयद अली, अब्दुस्समद आदि फारसी चित्रकार भारत आये थे। आइन ए अकबरी में 15 से अधिक चित्रकारो का उल्लेख है। धीरे–2 इसमें फारसी प्रभाव घटता गया। जहॉगीर ने चित्रकला को विशेष बढावा दिया और आकारिजा के नेतृत्व में आगरा में एक चित्रणशाला की स्थापना की थी। इसी के समय फारूख बेग ने बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह का चित्र बनाया था। औरंगजेब ने चित्रकला का विरोध किया था और उत्तरवर्ती मुगलशासको ने इसको संरक्षण नही दिया जिससे बडे–2 चित्रकार मुगल दरबार से हटकर विभिन्न प्रान्तों में फैल गये। इनमें से अधिकांश राजस्थान चले गये। यहॉ उन्होने स्वछन्द रूप से मौलिक चित्रकारी की। यहॉ की चित्रकारी में रेखाओ का संयोजन, रंगो का सामंजस्य और अनुपात देखते ही बनता है। भारतीय चित्रकला के कई नमूने सवाई मानसिंह संग्रहालय जयपुर और भारतीय संग्रहालय कलकत्ता में सुरक्षित है। राजस्थानी चित्रकला शैली विभिन्न राजपूत शासको के संरक्षण में फूली फली थी। मुगलो के प्रभाव से युक्त होने के पश्चात राजस्थानी चित्रकला ने तेजी से प्रगति की थी। अनेक विशिष्टतायें अर्जित कर लेने के कारण यहॉ की चित्रकला शैलियों को मुख्यतः 4 भागो में बाटा गया है।

1.	मेवाड शैली	(चित्तौड, उदयपुर)
2.	जयपुर शैली	(जयपुर, अलवर)
3.	बूदी कोटा शैली	(बूंदी, कोटा)
4.	मारवाड शैली	(बीकानेर, अजमेर, किशनगढ)

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएं

1. लोक जीवन का सानिध्य, भाव प्रवणता का प्राचुर्य, विषय–वस्तु का वैविध्य, वर्ण वैविध्य, प्रकृति परिवेश देश काल के अनुरूप आदि विशेषताओं के आधार पर इसकी अपनी पहचान है।
2. धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों में पोषित चित्रकला में लोक जीवन की भावनाओं का बाहुल्य, भक्ति और श्रृंगार का सजीव चित्रण तथा चटकीले, चमकदार और दीप्तियुक्त रंगों का संयोजन विशेष रूप से देखा जा सकता है।
3. राजस्थान की चित्रकला यहाँ के महलों, किलों, मंदिरों और हवेलियों में अधिक दिखाई देती है।
4. राजस्थानी चित्रकारों ने विभिन्न ऋतुओं का श्रृंगारिक चित्रण कर उनका मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अंकन किया है।
5. मुगल काल से प्रभावित राजस्थानी चित्रकला में राजकीय तड़क–भड़क, विलासिता, अन्तःपुर के दृश्य एवं झीने वस्त्रों का प्रदर्शन विशेष रूप से देखने को मिलता है।
6. चित्र संयोजन में समग्रता के दर्शन होते हैं। चित्र में अंकित सभी वस्तुएँ विषय से सम्बन्धित रहती हैं और उसका अनिवार्य महत्त्व रहता है। इस प्रकार इन चित्रों में विषय–वस्तु एवं वातावरण का सन्तुलन बना रहता है। मुख्य आकृति एवं पृष्ठभूमि की समान महत्ता रहती है।
7. राजस्थानी चित्रकला में प्रकृति का मानवीकरण देखने को मिलता है। कलाकारों ने प्रकृति को जड़ न मानकर मानवीय सुख–दुःख से रागात्मक सम्बन्ध रखने वाली चेतन सत्ता माना है। चित्र में जो भाव नायक के मन में रहता है, उसी के अनुरूप प्रकृति को भी प्रतिबिम्बित किया गया है।
8. मध्यकालीन राजस्थानी चित्रकला का कलेवर प्राकृतिक सौन्दर्य के आँचल में रहने के कारण अधिक मनोरम हो गया है।
9. मुगल दरबार की अपेक्षा राजस्थान के चित्रकारों को अधिक स्वतन्त्रता थी। यही कारण था कि राजस्थानी चित्रकला में आम जनजीवन तथा लोक विश्वासों को अधिक अभिव्यक्ति मिली।
10. नारी सौन्दर्य को चित्रित करने में राजस्थानी चित्रशैली के कलाकारों ने विशेष सजगता दिखाई है।

मेवाड शैली की राजस्थानी चित्रकला हठी सिसोदिया शासको के कारण मुगल चित्रकला शैली से सबसे कम प्रभवित हुई। यह मुख्यतः राणा जगत सिंह (1625–52) के शासन काल में विकसित हुई। इसके अन्तर्गत रागमाला, रामायण, रसमंजरी, गीतगोविन्द आदि पद विभिन्न चित्र बने। जयपुर शैली के विकास में राजा जय सिंह, सवाई राजा माधो सिंह और सवाई राजा प्रताप सिंह का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसमें भागवत पुराण, रागमाला, बारहमासा आदि पर आधारित चित्र, छवि चित्र और भित्ति चित्र बडी संख्या में बनाये गये। बूंदी कोटा चित्र शैली में शिकार, विभिन्न पशुओ की लडाइयॉ राजाओ के मनोरंजन आदि की अधिकता है। कोटा के राजमहलो में सुन्दर भित्ति चित्र भी बनाये गये जो वहॉ की चित्रकला में विशिष्ट स्थान रखते है। प्राचीन मारवाडा एवं राठौरवंशी जोधा द्वारा स्थापित जोधपुर राज्य में पल्लवित होने वाली चित्रकला मारवाड या जोधपुर शैली के नाम से जानी जाती है।

मारवाड की सांस्कृतिक परम्परा एवं कलात्मक परिवेश को नया रूप देने का श्रेय राजा मालदेव को है। राजा मालदेव (1532–68) ने अपनी वीरता, बुद्धिमत्ता एवं दूरदर्शिता से इसे मेवाड शैली के प्रभाव से पृथक अलग आस्तित्व प्रदान किया था।[7] प्रारम्भिक कला की दृष्टि से उनके समय का प्रसिद्ध ''उत्तराध्यन सूत्र'' जो बडौदा संग्रहालय में सुरक्षित है, बहुत महत्व रखता है। चोखेलाल महल के भित्ति चित्रों में तत्कालीन चित्रण का स्वरूप देखने को मिलता है। 1610 में चित्रित 'भागवत पुराण' में मारवाड

की अनेक स्थानीय विशेषताये प्रदर्शित होती है। इनमें अर्जुन कृष्ण आदि की वेशभूषा मुगली है परन्तु उनके चेहरो की बनावट स्थानीय है। इसी प्रकार गोपिकाओ की वेशभूषा मारवाडी ढ़ंग की है परन्तु उनके गहने मुगल ढंग के है। ढोला मारू, विलावन रागिनी आदि चित्रों मे भी मुगल प्रभाव दिखता है। मारवाडी चित्रकला शैली में प्रेम कथाओ, साहित्यिक कृतियों पर आधारित चित्र विभिन्न ऋतुओ का चित्रण आदि किया गया है। इसमें जानवरों के अंकन विशेषतया ऊॅट, घोड़ो तथा लाल पीले नीले और सुनहरे रंगो की प्रधानता दी गई है। विजय सिंह एवं मान सिंह के काल में श्रृंगार रस के अधिक चित्र तैयार किये गये। जिनमें नाथ चरित्र, भागवत, शुकनासिक चरित्र प्रमुख है।

जोधपुर शैली में लम्बे चौडे, गठीले बदन के पुरूष दिखाये गये है। उनकी मूॅछ, ऊॅची पगडी, राजसी वैभव के वस्त्राभूषण विशेष प्रभावशाली है। पगडी पर तुर्री, कलंगी, कमर में तलवार हाथ में भाला दिखाया गया है। स्त्रियों के नाक नक्शो को अव्यंत रूचिकार ढंग से चित्रित किया गया है। वीर जी नारायण दास (1700 ई0), भाटी अमरदास (1750), छज्जू भाटी किशनदास (1800) आदि चित्रकारो के नाम प्राप्त होते है। बीकानेर शैली का विकास अनूप सिंह के काल में हुआ। इसमें पंजाब और दक्षिण का प्रभाव देखने को मिलता है। फव्वरो, दरबार के दिखावों का चित्रण है।

किशनगढ सुन्दरता की दृष्टि से रोचक शैली है। यह सावंत सिंह के काल में विकसित हुई। यह अन्य शैलियों से बिल्कुल भिन्न हैं, अपनी बनी ठनी शैली के लिये प्रसिद्ध है। इसमे आकृतियों को बडे रूप में चित्रित किया गया है – जैसे– बादाम के आकार की ऑखे और लम्बी–2 अगुलियॉ राजा सावतं सिंह ने दासी से प्रेम होन के बाद अपने और उसके चित्र राधा कृष्ण के रूप में बनवाये। इस शैली में नृत्य, नौका विहार, त्योहारो, होली , दीपावली दुर्गा पूजा आदि के चित्र बनाये गये है। इस प्रकार हम देखते है कि राजस्थानी शैली में 3 प्रकार के चित्र बने प्रथम राजा, सरदार, राजदरबार और शिार से सम्बन्धित, द्वितीय में साहित्यिक, रसमंजरी रसिक प्रिया, भागवत पुराणा और तृतीय लोक कला सम्बन्धी चित्र जिसमें जनसाधारण के जीवन और कार्यकलापो को प्रस्तुत किया गया ।

राजस्थानी चित्रकला वहॉ की परम्परा में इतनी गहरी समा गयी है कि आधुनिक काल में भी इसके लक्षण दिखाई देते है। आज भी बहुत से राजस्थानी कलाकार रेशम, हॉथी दॉत, सूती कपडे और कागज पर लघुचित्रकारी करते आ रहे है। भारत में बसौली और कांगडा चित्रकला शैली के रूप में पहाडी चित्रकला का भी विकास हुआ । मुगलशैली और राजधानी शैली के समन्वय से, कश्मीर की लोककला भित्ति शैली इसका जन्म हुआ था। कांगडा शैली में प्रकृति प्रेम और ईश्वर प्रेम दोनो को सावधानी से चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। वैष्णव गीतो का चित्रांकन भी इसकी विशेषता है। हीररॉझा, सोनीमहिवाल आदि लोकप्रिय प्रेम गाथाओ को भी चित्रित किया गया। इस प्रकार भारतीय चित्रकला के विकास में राजस्थानी चित्रकला के योगदान को नकारा नही जा सकता। यह भारत के सांस्कृतिक विकास का अभिन्न अंग है। राजस्थानी चित्रकला सांस्कृतिक साक्ष्यों के रूप में इतिहास अध्ययन के लिये महत्वपूर्ण स्त्रोत है। राजस्थानी चित्रकला भारत के लिये एक गौरवमयी परम्परा का बोध कराती है। इसे छोडकर हम भारतीय चित्रकला के विकास की कल्पना नही कर सकते। इसलिये राजस्थानी चित्रकला से प्रत्येक व्यक्ति को अवगत होना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1 ए० एल बाशम अदभुत भारत शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी आगरा
2 दजेन्द्र नारायण झा और कृष्ण मोहन श्री माली, प्राचीन भारत का इतिहास हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय 2004
3 एल०पी०शर्मा मध्यकालीन भारत लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा 2006
4 जोधपुर की हकीकत बही राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर
5 डॉ कालूराम शर्मा और डॉ प्रकाश व्यास राजस्थान का इतिहास

6 डा०वी०एस० भार्गव राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण
7 रामगोपाल विजयवर्गीय राजस्थानी चित्रकला
8 खंडावाला किशनगढ़ पेंटिंग्स ललित काला अकादमी
9 हरिश्चंद्र वर्मा मध्य कालीन भारत भाग–2 हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय 2005